शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 12 अक्टूबर - दिसंबर - 2025 Impact factor– 03

'वापसी" कहानी में चित्रित वृद्ध विमर्श'

डॉ. श्रीमाया सी
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
पय्यन्नूर कॉलेज पय्यन्नूर, केरला - 670327 Mob : 949495868174
Email : sreemaya2012@gmail.com

उषा प्रियंवदा का जन्म 24 दिसंबर 1930,कानपुर में हुआ। हिंदी कथा-साहित्य के क्षेत्र में उषा प्रियवंदा का नाम विशेष उल्लेखनीय है । उषा प्रियंवदा प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए तथा पी एच डी की पढ़ाई पूरी करने के बाद दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन किया । अंग्रेजी साहित्य के गहन अध्ययन के साथ हिंदी के प्रति सहज रुचि ने इनके चिंतन और अभिव्यक्ति को विशिष्ट धरातल प्रदान किया है ।

पचपन खंभे लाल दीवारें,रुकोगी नहीं राधिका और शेष यात्रा इनकी प्रसिद्ध औपन्यासिक कृतियाँ है । जब कि 'एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठ,जिंदगी और गुलाब के फूल, मेरी प्रिय कहानियाँ, फिर बसंत आया औदि इनके कहानी- संग्रह हैं। इनकी कहानियाँ सभी अर्थ में जीवन्त है, बिल्कुल आज की है । आज के मन और आज के जीवन की है।

वृद्ध विमर्श को प्रतिपादित करनेवाली उषा प्रियंवदा की प्रमुख कहानी है 'वापसी'। प्रस्तुत कहानी में सेवानिवृत्त होने के बाद गजाधर बाबू बड़ी बेसब्री से घर लौटने, बीवी,बच्चों के साथ रहने की आकांक्षा करता है । पर घर वालों के व्यवहार से बुरी तरह आहत होता है । इस असहनीय व्यवहार का लेखिका ने मार्मिक चित्रण किया हैं ।

वृद्ध विमर्श एक महत्वपूर्ण सामाजिक और साहित्यिक अवधारणा है जो समाज में वृद्ध व्यक्तियों की समस्याओं, उनकी उपेक्षा, अकेलेपन, और अनुभवों के महत्व पर केंद्रित है । वृद्ध विमर्श साहित्य के माध्यम से वृद्धों की पीड़ा, आधुनिकता के टकराव और संयुक्त परिवार के विघटन के यथार्थ को सामने लाता है ताकि युवा पीढ़ी उनके जीवन के अनुभवों से सीख सके और समाज में उन्हें सम्मान और सह अस्तित्व मिल सके। यह वृद्धों के प्रति समाज के दृष्टिकोण उनके घटती सामाजिक भूमिका और उनसे जुड़े भावनात्मक और व्यावहारिक मुद्दों पर केंद्रित चर्चा है ।

'वापसी' उषा प्रियंवदा द्वारा लिखित एक मनोवैज्ञानिक सामाजिक और यथार्थवादी कहानी है । जो आधुनिकता के दौर में टूटते मध्यवर्गीय परिवार, पीढियों के टकराव और सेवानिवृत्ति के बाद एक व्यक्ति के अकेलेपन व उपेक्षा की त्रासदी को दर्शाती है, जहां गजाधर बाबू को अपने ही घर में परायापन महसूस होता है ।

'वापसी' कहानी के आरंभ में कहानी के मुख्य पात्र गजाधर बाबू और सहायक गनेशी दोनों मिलकर रेलवे क्वार्टर में वापसी की तैयारी करने का चित्रण उषा प्रियंवदाजी ने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश । पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर जा रहे थे । इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर बिताया था । उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे । इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे । संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था । उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बड़े लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियां कर दी थी । दो बच्चे ऊंची कक्षाओं में पढ़ रहे थे । गजाधर बाबू नौकरी के कारण प्रायः छोटे स्टेशनों पर रहे और उनके बच्चे और पत्नी शहर में , क्योंकि बच्चों की पढ़ाई में कोई बाधा न हो । शहर में रहने से उन्हें किसी प्रकार की कमी का बोध न होने पाए। गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी थे ।

गजाधर बाबू एक रेलवे कर्मचारी थे, जो हमेशा अपने परिवार से दूर रहे । उन्होंने पूरे जीवन परिवार के लिए पैसे कमाए और सेवानिवृत्ति के बाद परिवार के साथ रहने और सम्मान पाने की उम्मीद की । उन्होंने सोचा कि अब जिंदगी के बचे दिन अपने परिजनों के साथ प्यार और आराम से बिताएंगे ।घर लौटने पर उन्हें पता चला है कि उनकी अनुपस्थिति में परिवार की व्यवस्था बदल गई है । उन्हें घर में एक अजनबी की तरह रखा जाता है । उनकी बातों में किसी को दिलचस्पी नहीं होती और वे अपने ही घर में अकेलापन महसूस करते हैं ।

'वापसी' कहानी के मुख्यपात्र है गजाधर बाबू, उनकी पत्नी, बसंती - गजाधर बाबू की बेटी है जो कॉलेज में पढ़ती है । अमर गजाधर बाबू का बेटा है । नरेंद्र गजाधर बाबू का छोटा बेटा है । गणेशी उनके पुराने सेवक का नाम है ।

गजाधर बाबू के प्रति अमर और उसकी बहू की शिकायत बहुत थीं । उनका कहना था कि गजाधर बाबू हमेशा बैठक में ही पड़े रहते हैं, कोई आने - जाने वाला हो तो कहीं बैठाने की जगह नहीं । अमर को अब भी वह छोटा - सा समझते थे और मौके - बेमौके टोक देते थे । बहु को काम करना पड़ता था और सास जब तब फूहड़पन पर ताने देती रहती थी । पहले अमर घर का मालिक बनकर रहता था, बहु को कोई रोक-टोक न थी, अमर के दोस्तों का प्राय: यहीं अड्डा जमा रहता था और अंदर से नाश्ता चाय तैयार होकर जाता रहता था । बसंती को भी वही अच्छा लगता था । बेटी और बहू घर का कोई काम नहीं करती और यदि उन्हें रसोई बनाने को कहा जाए तो वे जानबूझकर आवश्यकता से अधिक राशन खर्च कर देती है। इसलिए उनकी पत्नी ने रसोई की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है ।

अगले दिन वह सुबह घूमकर लौटे तो उन्होंने पाया कि बैठक में उनकी चारपाई नहीं है । पत्नी की कोठरी में झांका तो अचार रजाइयों और कनस्टरों के मध्य अपनी चारपाई लगी पाई । गजाधर बाबू ने कोट उतारा और कहीं टांगने को दीवार पर नज़र दौड़ाई । फिर उसे मोडकर अलगनी के कुछ कपड़े खिसकाकर, एक किनारे टाँग दिया । कुछ खाए बिना ही अपनी चारपाई में लेट गए । कुछ भी हो, तन आखिरकार बूढा ही था ।

गजाधर बाबू ने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल न देंगे । यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह यहीं है तो यहीं पड़े रहेंगे । अगर कहीं और डाल दी गई तो वहां चले जाएंगे । यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं तो अपने ही घर में परदेसी की तरह पड़े रहेंगे और उस दिन के बाद सचमुच गजाधर बाबू कुछ नहीं बोले । नरेंद्र मांगने आया तो बिना कारण पूछे उसे रुपए दे दिए । बसंती काफी अंधेरा हो जाने के बाद भी पड़ोस में रही तो भी उन्होंने कुछ नहीं कहा-पर उन्हें सबसे बड़ा दुख यह था कि उनकी पत्नी ने भी उनमें कुछ परिवर्तन लक्ष्य नहीं किया । वह मन - ही मन कितना भार ढो रहे हैं, इससे वह अनजान ही बनी रही । बल्कि उन्हें पति के घर के मामले में हस्तक्षेप न करने के कारण शान्ति ही थी । कभी-कभी कह भी

उठती, "ठीक ही है, आप बीच में न पड़ा कीजिए,बच्चे बड़े हो गए हैं, हमारा जो कर्तव्य था, कर रहे हैं। पढा रहे हैं, शादी कर देंगे। गजाधर बाबू ने अनुभव किया है कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त - मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है"। घर में अन्य काम करने केलिए एक नौकर को रखा था। गजाधर बाबू ने घर का खर्च कम कराने केलिए नौकर का हिसाब कर दिया। इस मामले में बच्चे माँ से शिकायत करते हैं - "घर में नौकर के अभाव में नरेंद्र को साइकिल पर गेहूं रखकर आटा पिसाने केलिए जाना पड़ेगा और बसंती को कॉलेज जाने के साथ लौटकर घर में झाड़ू भी लगाना पड़ेगा, ये सब उनके बस की बात नहीं है"। बडा बेटा अमर भुनभुनाया, "बूढ़े आदमी हैं, हर चीज़ में दखल क्यों देते हैं"। पत्नी भी बच्चों के साथ चर्चा में भाग ली। ये सब बातें अंदर कमरे में बैठकर गजाधर बाबू सुन रहे थे। कुछ देर बाद पत्नी को बुलाकर गजाधर बाबू ने कहा " मुझे सेठ रामजीमल की चीनी - मिल में नौकरी मिल गई है। खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आएँ, वही अच्छा है"। गजाधर बाबू पत्नी से अपने साथ चलने की बात कहने पर उसने इंकार कर दिया।

परिवार के सब लोगों ने बड़ी तात्परता के साथ रिक्षा बुलाकर सामान बांधकर उनको विदा कर दिया। उनके जाते ही वे सब लोग अपने -अपने काम में तल्लीन हो गये। अन्त में पत्नी पुत्र से गजाधर बाबू की चारपाई कमरे से निकाल देने के लिए भी कहती है। कमरे में चलने तक की जगह नहीं हैं। इससे व्यक्त होता है कि बूढ़े पिताजी और उनके सामान के लिए भी अपने घर में कोई स्थान नहीं।

"वापसी" कहानी के शीर्षक की सार्थकता गहरी है क्योंकि यह सिर्फ गजाधर बाबू के घर लौटने (सेवानिवृत्ति के बाद) को नहीं बल्कि आधुनिकता के दौर में परिवार से कटे, उपेक्षित महसूस करने वाली व्यक्ति की भावनात्मक (वापसी नौकरी पर) और फिर जीवन की जड़ों, अपनत्व की तलाश को दर्शाती हैं जो परंपरा और आधुनिकता के टकराव, पारिवारिक रिश्तों की कटु सच्चाई और अकेलेपन की विडंबना को उजागर करती है।

संक्षेप में मेरा विचार यह है कि उषाप्रियंवदा जी की कहानी यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व करती है। वृद्धजीवन यथार्थ का खुला हुआ प्रस्तुतीकरण है, "वापसी" कहानी। गजाधर बाबू के द्वारा आदमी के अकेलेपन को, समय के साथ एक पीढ़ी की बदली हुई मानसिकता को सामाजिक परिवर्तनों के साथ आदमी के बदलते सम्बन्धों को सच्चाई से अभिव्यक्ति दी गयी है। गजाधर बाबू का अकेलापन आधुनिक जीवन के बीच उभरता हुआ विवशता का अकेलापन है।उनकी सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में डूब गयी। अन्त में वह परिवार छोड़कर चला जाता है।

अंततः गजाधर बाबू वापस उसी एकाकी जीवन में लौट जाते हैं, जिससे परंपरा और आधुनिकता के टकराव व पीढियों के बीच की दूरी का मार्मिक चित्रण होता है। कहानी आज की पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच के संघर्ष को दर्शाती है। परिवार से मिली इस उपेक्षा और अकेलेपन से दुःखी होकर,गजाधर बाबू यह महसूस करते हैं कि उन्हें अपने ही घर में कोई जगह नहीं मिली। वे फिर से भी नौकरी करने का फैसला करते हैं और उसी छोटे स्टेशन पर लौट जाते हैं, जहां से वे रिटायर हुए थे, क्योंकि घर में रहकर वे और अकेले हो जाते हैं। कहानी का शीर्षक "वापसी" सार्थक और बहुत प्रासंगिक भी है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. वापसी - मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियंवदा
2. यथार्थवाद - शिवकुमार मिश्र
3. समकालीन कहानी की पहचान - डॉ. नरेंद्र मोहन

गुलज़ार के गीत 'कल्लू-मामा' में मनोवैज्ञानिक चेतना

अंकुर नाविक
मानसेवी शिक्षक, हिंदी विभाग, उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल(म.प्र.)

गुलज़ार बहुआयामी प्रतिभा के साथ अनेकों विधाओं- काव्य, गीत, पटकथा लेखन, फिल्म-निर्देशन आदि में सृजन करने वाले उल्लेखनीय रचनाकार हैं। साथ ही उर्द-हिंदी की बहुभाषिकता को साधने वाले गुलज़ार उर्फ़ सम्पूरन सिंह कालरा की चारित्रिक विविधता उन्हें बहुविषयी रचनाकार के रूप में सशक्त करती है। समूचे रचनात्मक वांग्मय की विविधता मानव मस्तिष्क के विविध पहलुओं व जटिल समस्याओं का ही प्रतिबिम्ब होती हैं। गुलज़ार की विविधता भी उनके जीवनानुभवों की प्रतिध्वनि-सी प्रतीत होती है। विशेषकर फिल्म गीत विधा, जिसमें सिनेमा के पात्र के मस्तिष्क में उतरकर, उससे एकाकार करते हुए गीत को धुन में पिरोया जाता है, गुलज़ार सशक्त व सहज रूप में उभरते हैं। उनके गीतों में जहाँ एक ओर उर्द के सलीके में बहती मद्धिम धारा है, तो दूसरी ओर भोजपुरी व मुंबईया भाषा के झरने परिस्थितियोंवश पटकथा व पात्रों की मनःस्थितियों के कारण स्वतः स्फूर्त होकर बह निकलते हैं।जैसे-'बीड़ी जलई ले' में उत्तर भारतीय ग्रामीण पात्रों की सिनेमाई परिस्थितियों व मानसिक उद्वेगों की अभिव्यक्ति हो, अथवा 'लकड़ी की काठी' में बाल-मन का भोलापन। प्रत्येक गीत में गुलज़ार निष्पक्ष व सहज होकर उपयुक्त शब्दों का सृजन करते हैं।

ऐसा ही 'सत्या' फिल्म का प्रसिद्ध गीत है- 'कल्लू मामा'। अपराध जगत में लिप्त पात्रों की मनःस्थिति, मस्ती एवं उच्छृंखलताओं के क्षणों को मुंबईया बोली में अभिव्यक्त करने वाला यह गीत तत्समय ही नहीं, अपितु हिंदी सिने जगत के समस्त गीतों के बीच भी अल्हदा ध्वनित होता है। यही कारण है कि यह गीत वर्तमान में 'कल्ट' की श्रेणी में रखा जाता है। किंतु इस गीत की अल्हदा ध्वनि व शब्दों का विश्लेषण करें, तो पाते हैं कि यह गीत बहुत सहज रूप में एवं अत्यंत प्रचलित शब्दों के साथ आधुनिक समय की मनोवैज्ञानिक पड़ताल करता है। इस गीत का हर शब्द स्वयं के मनोभावों, संवेदनाओं को दरकिनार कर, किए गये तमाम दुनियावी समझौतों से मुक्ति की बात करता है। अतः इस सामान्य से ध्वनित होने वाले गीत के विस्तृत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता उत्पन्न होती है। चूंकि गीत पहले से ही प्रसिद्ध है, 'कल्ट' श्रेणी में है अर्थात् वर्तमान जनमानस से जुड़ा हुआ है, इसलिये गीत की मनोवैज्ञानिक पड़ताल अप्रत्यक्ष रूप में वर्तमान जनमानस के स्वरुप को ही प्रतिबिम्बित करेगी, जो आगामी रचनाकारों व मानव-जीवन को और अधिक संवेदनशील व बहु-संवेदनाओं से युक्त बनाने में सहायक होगा।

'कल्लू-मामा' गीत में दो शब्द या कहें पात्रनुमा बिम्ब हैं, जो प्रतीक बनकर बार-बार श्रोता के कर्ण में गूँजते हैं- 'कल्लू मामा' और 'भेजा'। यहाँ 'कल्लू-मामा'- आधुनिक मानव का प्रतीक है और मस्तिष्क का देशज शब्द 'भेजा' कभी 'संवेदनशील बुद्धि' का प्रतीक बनकर उभरता है, तो कभी 'संवेदनहीन बुद्धि' का।

फिल्म 'सत्या' आपराधिक पृष्ठभूमि के वास्तविक जीवन में सक्रिय पात्रों की संवेदनाओं को निष्पक्ष होकर प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। यदि 'कल्लू मामा' गीत भी सुनें तो, इसमें गीतकार ने अपराध जगत में सक्रिय मानव की संवेदनाओं को केंद्र में रखकर उसकी वास्तविक मनःस्थिति की ही अभिव्यक्ति सटीक शब्दों में की है, जिसमें 'भेजा' अर्थात् मस्तिष्क 'संवेदनशील बुद्धि' या 'हृदय' तत्व के रूप में चित्रित किया गया है।